आप (स०) ने यह भी कहा **"सौम्यता रखो ! क्योंकि अगर किसी चीज़ में सौम्यता पाई जाती है तो यह उसे अधिक सुंदर बनाती है और जब किसी चीज़ में से इसे निकाल लिया जाए तो वह चीज़ तुच्छ बन जाती है"**

> "तथा रहमान (दयालु) के सच्चे भक्त वह हैं, जो धरती पर नम्रता से चलते हैं तथा जब जाहिल लोग उनसे बातें करने लगते हैं, तो वह कह देते है कि सलाम है।"
> (कुरआन-२५:६३)

विनम्रता

पैगम्बर मुहम्मद (स०) लोगों को इस बात से मना करते कि वे उनके आने पर आदर भावना से खड़े हो जायें। आप तो सभा में जहाँ स्थान मिलता बैठ जाते और अपने लिये कोई खास या ऊँचा स्थान नहीं चुनते। आपने कभी ऐसे कपड़े नहीं पहने जिससे वे अपने साथियों से अलग दिखें या खास और उच्च लगें।

आप (स०) तो गरीब ज़रूरतमंदों में घुल मिल जाते, आप बुजुर्ग लोगों के साथ बैठते और विधवाओं की मदद करते।जिन लोगों ने आपको पहले ना देखा हो वे आपको भीड़ में औरों से अलग ना पाते।

अपने साथियों को संबोधित करते हुए पैगम्बर मुहम्मद (स०) ने कहा था, **"अल्लाह ने मुझ पर यह बात अवतरित की है कि तुम विनम्र बनो। कोई किसी पर घमंड ना करे और ना ही कोई किसी का दमन करे।"**

आप (स०) तो इतने विनम्र थे कि इस बात तक से डरते कि कहीं उनकी पूजा न की जाने लगे जब्कि यह हक सिर्फ अल्लाह का है। आप (स०) ने कहा; **"मेरी प्रशंसा करने में हद से आगे ना बढ़ो जैसा कि ईसाइयों ने पैगम्बर ईसा पुत्र मरियम की प्रशंसा मे किया। मैं तो केवल अल्लाह का दास हूँ, अत: मुझे अल्लाह का बन्दा और उसका पैगंबर कहो।"**

आदर्श पति

> "उनके साथ (अपनी बीवियों के साथ)अच्छा व्यवहार करो।"
> (कुरआन-४:१९)

पैगम्बर (स०) की चहीती बीवी आईशा (र०) अपने महान पति के बारे में कहती हैं, **"वे हमेशा घर के कामों में मदद करते थे, अक्सर अपने कपड़े खुद ही सी लेते, अपने जूतों की मरम्मत भी खुद ही करते, ज़मीन पर झाड़ू देते, अपने जानवरो का दूध खुद दुहते और उनका खयाल भी रखते तथा घर का काम भी करते थे। वे सीर्फ खुद ही एक समर्पित पति नहीं थे बल्कि अपने साथियों को भी अपना अनुसरण करने को कहते।"** पैगम्बर मुहम्मद (स०)ने कहा कि **"अपने धर्म के प्रति सबसे आस्तिक वह है जिसके आचार-विचार सबसे अच्छे हों। और उनमें सबसे अच्छा चह है जो अपनी बीवियों के मामले में सबसे अच्छा है।"**

आदर्श उदाहरण

> "तथा नि:संदेह आप (ऐ मुहम्मद) अति (उत्तम) स्वभाव पर हैं।"
> (कुरआन-

जो कुछ भी पहले गुजरा वह सब तो एक झलक मात्र था कि किस तरह पैगम्बर (स०) ने अपनी ज़िन्दगी व्यतीत की। दयालुता एवं करुणा की जो मिसालें बताई गई हैं यह कुछ लोगों को आश्चर्यचकित कर सकती हैं क्योंकि आज तक इस्लाम को मीडिया ने जिस प्रकार पेश किया है वह बिल्कुल इसका उलट है।

अगर किसी को इस्लाम को समझना है तो उसे चाहिये कि वह इसके स्रोतों अर्थात पवित्र कुरआन और पैगम्बर मुहम्मद (स०) की बातो का अध्ययन करें। तथा कुछ भटके हुए मुसलमानों को आधार बना कर इस्लाम को ना समझें।

मशहूर गैर-मुस्लिम हस्तियों की टिप्पणियाँ

महात्मा गांधी, अपनी पुस्तक यंग इंडिया में लिखते हैं कि: **"वह पैगम्बर (स०) का सादापन तथा उनका आत्मविलोपन था, अपनी प्रतिज्ञा के प्रति कर्तव्यनिष्ठ चिंता थी, अपने मित्रों तथा अनुयाइयों के लिये उनका तीव्र समर्पण था, उनकी निडरता तथा साहस था, तथा अपने मिशन और ईश्वर में उनकी सुनिश्चित आस्था थी। कोई तलवार नहीं बल्कि ये वो चीज़ें थीं जिसके कारण उन्होंने सभी तरह की रुकावटों को पार कर दिया।"**

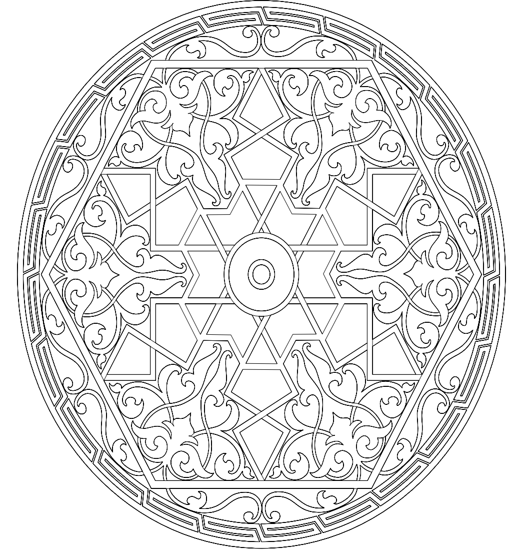
जार्ज बर्नार्ड शॉ, एक मशहूर अंग्रेज़ नाटककार का कहना है कि: **"इस दुनिया को मुहम्मद जैसी मानसिकता वाले इंसान की सख्त ज़रूरत है; मध्य युग के धार्मिक लोगों ने अपनी अज्ञानता एवं पक्षपाती मानसिकता के कारण इस व्यक्ति को बहुत ही गलत तरीके से पेश किया है क्योंकि वे इस व्यक्ति को ईसाइ धर्म का दुश्मन मानते थे। लेकिन इस व्यक्ति की जीवनी पर नज़र डालने के बाद मैंने इसे एक अद्भुत एवं चमत्कारिक व्यक्तित्व वाला पाया, और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वे कभी ईसाइयत के दुश्मन नहीं हो सकते, बल्कि उन्हें तो मानवता का उद्धारक कहना चाहिये।**

मेरे खयाल में अगर वर्तमान समय में उन्हें इस दुनिया की बाग-दौड़ दे दी जाये, तो वे सारे समस्याओं का समाधान कर देंगे और सुख एवं शांती का राज हो जायेगा जिसका इंतज़ार इस दुनिया को लंबे समय से है।"

पैगम्बर मुहम्मद (स०) पर अवतरित होने वाले अंतिम ग्रंथ, पवित्र कुरआन को अपनी भाषा में नि:शुल्क प्राप्त करने के लिये हमसे संपर्क करें:

This is for private circulation only, Please don't throw anywhere.

आपको इन्हें जानना चाहिये



पैगम्बर मुहम्मद

(सलामती हो उनपर)

Call or SMS : 022 2373 7899
08767 333 555
albirr.foundation@gmail.com
www.albirr.in
al-birr foundation

कौन हैं पैगम्बर मुहम्मद (सलामती हो उनपर)

मुसलमानों का मानना है कि मुहम्मद (स०) पैगम्बरों की श्रृंखला में सबसे अंतिम पैगम्बर हैं। और पैगम्बरों का काम यह है कि वे लोगों को सिर्फ एक सच्चे ईश्वर (अरबी में अल्लाह) की आज्ञाकारिता और उपासना की तरफ बुलाते हैं। आदम, नूह, इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब, यूसुफ, मूसा, दाऊद, सुलैमान और ईसा (सलामती हो उन सब पर) उन पैगम्बरों में से हैं जिन्हें अल्लाह ने इस पैगंबरी का दायित्व सौंपा।

"अवश्य तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल (मुहम्मद (स०)) में उत्तम आदर्श है। प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह की तथा कयामत के दिन की संभावना रखता है तथा अत्याधिकता अल्लाह को स्मरण करता है।" (कुरआन-

जिस प्रकार मूसा (अ०) को ग्रंथ के रूप में तौरात (मूसा पर अवतरित होने वाला असल ग्रंथ) दी गई और ईसा (अ०) को इंजील (ईसा पर अवतरित होने वाली अविकृत गास्पल) दी गई उसी प्रकार मुहम्मद (स०) पर सुनिश्चित एवं अंतिम ग्रंथ कुरआन अवतरित हुआ ताकि वे इसकी शिक्षाओं पर कार्यरत हो कर लोगों को इसे अपने जीवन में लागू करने का नमूना बता सकें।

पैगम्बर मुहम्मद (स०) की बीवी आईशा (र०) से पूछा गया कि वे आप (स०) का विवरण दें तो उन्होंने उत्तर दिया कि वे (चलते फिरते कुरआन थे) अर्थात आप (स०) ने पवित्र कुरआन की शिक्षाओं को पूर्ण रूप से अपने दैनिक जीवन में लागू किया था। हम आपको बतलायेंगे कि पैगम्बर मुहम्मद (स०) ने किस प्रकार इन महान शिक्षाओं को अपने महान कर्मों से साबित किया है।

दया का मिशन

"तथा हमने आपको पूरे विश्व के लिए दया बनाकर ही भेजा है।" (कुरआन-२१:१०७)

लोगों को नमाज़, रोज़ा और ज़कात का आदेश देने के साथ-साथ पैगम्बर मुहम्मद (स०) ने यह सीख भी दी है कि ईश्वर पर विश्वास रखने का एक अर्थ यह भी है कि दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए। आपने कहा **"तुममें सबसे अच्छा वह है जिसका चरित्र अच्छा हो।"**

पैगम्बर मुहम्मद (स०) की कितनी ही शिक्षायें हैं जो कर्म और विश्वास के आपसी संबंध को दर्शाते हैं। उदाहरण के तौर पर आप (स०) ने कहा कि **"जो कोई अल्लाह और अंतिम दिन पर विश्वास रखता है उसे चाहिये कि अपने पड़ोसी को तकलीफ ना दे तथा अपने महमान का सत्कार करे और बोले तो अच्छी बात करे या शांत रहे।"**

अल्लाह के अंतिम पैगम्बर (स०) ने लोगों को आपस में एक दूसरे का आदर और दया करने की शिक्षा दी। **"जो दूसरों पर दया नहीं करता (ईश्वर) उसपर दया नहीं करेगा।"**

एक बार लोगों ने पैगम्बर मुहम्मद (स०) से कहा कि वे अधर्मियों के खिलाफ प्रार्थना करें की उनपर अल्लाह का प्रकोप अवतरित हो जाये, लेकिन पैगम्बर (स०) ने कहा **'मैं अभिशाप नहीं बल्कि दया एवं करुणा बना कर भेजा गया हूँ।"**

"माफ कर दीजिये और जाने दीजिये, क्या तुम नहीं चाहते की अल्लाह तुम्हारी गलतियों को माफ कर दे? अल्लाह गलतियों को क्षमा करने वाला कृपालु है।" (कुर आन-२४:२

क्षमा

पैगम्बर मुहम्मद (स०) लोगों में सबसे अधिक सज्जन तथा क्षमा करने वाले थे। अगर कोई उनको गाली भी देता तो वे उसे माफ कर देते, और जब कोई जितना ही आक्रामक बनता वे उतने ही धैर्यवान बन जाते। वे बहुत ही नर्म एवं क्षमाशील थे, विशेषरूप से तब जब बदला लेने की पूरी ताकत रखते और उनका प्रतिद्वंदी कमज़ोर होता।

पैगम्बर मुहम्मद (स०) ने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को दंडित नहीं किया जिसने उनको तकलीफ पहुँचाई हो फिर चाहे वह व्यक्ति उनसे कितनी ही बड़ी व्यक्तिगत दुश्मनी क्यों ना रखता हो। वे तो दयालुता एवं क्षमाशीलता के एक उत्तम उदाहरण थे।जैसा कि पवित्र कुरआन में है; **"आप माफी का रास्ता अपनायें, भलाई के काम की शिक्षा दें और जाहिलों से अलग रहें।"** (७:१९९)

समानता

"अल्लाह की दृष्टि में तुम सब में वह सम्मानित है जो सबसे अधिक (अल्लाह से) डरने वाला है।" (कुरआन-

निम्नलिखित कथन में पैगम्बर मुहम्मद (स०) ने यह बतलाया है कि अल्लाह की नज़र में सारे मनुष्य एक समान हैं।

"सारे इंसान आदम (अ०) से हैं, और आदम मिट्टी से बनाए गए। किसी अरबी को गैर अरब पर और ना ही किसी गोरे को काले पर कोई श्रेष्ठता है, सिवाय उस व्यक्ति के जो अल्लाह से डरने वाला है।"

एक बार पैगम्बर (स०) के एक साथी ने अपने दूसरे साथी को घृणास्पद तरीके से पुकारते हुए कहा **"काली औरत के बेटे"** यह सुनकर पैगम्बर (स०) बहुत क्रोधित हुए और कहा कि **"तुम इसकी भर्तसना इसलिए करते हो क्योंकि इसकी माँ का रंग काला था? तुम्हारे अंदर अभी तक इस्लाम से पहले की अज्ञानता के चिन्ह बाकी हैं।"**

"पुण्य तथा पाप समान नहीं होते, बुराई को भलाई से दूर करो, फिर वही जिसके और तुम्हारे बीच शत्रुता है ऐसा हो जायेगा जैसे हार्दिक मित्र।" (कुरआन-४१:३४)

सहिष्णुता

"तुम उनका बुरा ना करो जो तुम्हारे साथ बुरा करें, लेकिन तुम उनसे क्षमा एवं दया का व्यवहार करो" यह तरीका था पैगम्बर मुहम्मद (स०) का उस व्यक्ति के प्रति जो उनको गालियाँ देता और परेशान किया करता था।

इस्लामी इतिहास में ऐसे कई प्रसंग मिलते हैं जब पैगम्बर मुहम्मद (स०) अपने साथ बुरा करने वाले व्यक्ति से बदला लेने में पूरी तरह सक्षम थे फिर भी उन्होंने ऐसा नहीं किया।

आप (स०) लोगों को विपत्ति के समय धैर्य रखने की सीख दी और आपने यह भी कहा कि **"प्रबल वह नहीं जो अपनी ताकत से लोगों पर काबू पाले बल्कि प्रबल तो वह है जो गुस्से के समय खुद पर काबू रखे।"**

धैर्य एवं सहिष्णुता का यह अर्थ नहीं है कि एक मुस्लिम प्रहार किये जाने पर भी किसी प्रकार का प्रतिरोध या खुद का बचाव ना करे। पैगम्बर (स०) ने कहा है कि **"दुश्मन से भिडंत की इच्छा ना रखो, लेकिन जब दुश्मन से मुकाबला हो जाए, तो धैर्य रखो (मज़बूती से डटे रहो)"**

सौम्यता

"अल्लाह की कृपा के कारण आप उनके लिये कोमल बन गये हैं और यदि आप कटु वचन या कठोर हृदय होते, तो यह सब आपके पास से भाग खड़े होते।" (कुरआन-३:१५९)

एक अनुयाई जो दस वर्षों तक मुहम्मद (स०) की सेवा में रहे, कहते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद (स०) व्यवहार में हमेशा सौम्यता बरतते थे। वे कहते है कि **'जब मैं कोई काम करता तो कभी मुझसे उस काम के बारे में कुछ नहीं पूछते और अगर मैं कोई काम नहीं करता तो मुझसे ना करने के बारे में सवाल भी नहीं करते। वे सारे लोगों में सबसे अधिक खयाल रखने वाले थे।"**

एक अवसर पर पैगम्बर मुहम्मद (स०) की बीवी आईशा (र०) उस व्यक्ति पर नाराज़ हो गईं जिसने उनका अपमान किया था, तो पैगम्बर (स०) ने उन्हें सलाह देते हुए कहा **"सौम्य और शांत बनो, ऐ आईशा! क्योंकि अल्लाह को हर मामले में सौम्यता पसंद है।"**

संक्षिप्तीकरण:

(स०) – सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (सलामती हो उनपर)

(अ०) – अलैहिस्सलाम (उनपर सलामती हो)

(र०) – रज़ियल्लाहु अन्हु (अल्लाह उनसे राज़ी हुआ)